वर्ष 26

अवध ज्योति

अवधी त्रैमासिकी

अक्टूबर-दिसम्बर 2020

कोरोना काल में अवधी

अवध-ज्योति

वर्ष : 26

अक्टूबर-दिसम्बर 2020

सम्पादक :

डॉ. रामबहादुर मिश्र

उप-संपादकः

रमाकांत तिवारी 'रामिल'

अतिथि सम्पादकः

प्रदीप तिवारी 'धवल'

सह सम्पादक :

विष्णु कुमार शर्मा

पीयर रिव्यू पैनल

डॉ. हेमराज सुंदर, मारिशस

श्री विक्रममणि त्रिपाठी, नेपाल

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ

डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, लखनऊ

डॉ.राकेश पाण्डेय, दिल्ली

श्री प्रदीप तिवारी 'धवल' लखनऊ

अवध भारती संस्थान

नरौली, हैदरगढ़,

बाराबंकी-225124

वेब -

www.awadhawadhi.com

e-mail:

awadhjyoti@gmail.com

Mob. : 9450063632

मुद्रक : सैप प्रिन्टर्स

बी.एच.ई.एल. रोड नं. 1

यूपीएसआईडीसी, जगदीशपुर

अमेठी मो. 9565723540

salmanansari7@gmail.com

विषय क्रम

1. रामजोहारि — सम्पादकीय — 2

2. कोरोना काल मा अवधी — अतिथि सम्पादक — 4

3. चिट्ठी पत्री - — संयज अवधी — 9

4. कविता - — 10

दांव, कोरोना, घिरउि, अवधी गीत, कोरोना जागरूकता गीत, गीधउ का लजावइ, अवधी लहरि, सखी जइहैं कोरोना, का कहिहैं, आजु जिउ उदास बाय, अवधी लोकगीत, आयी परधानी, मछेरिन, कोरोना भय्या लौटि जाव, भूलि गये, कारोना, अब तव चले जाव, परधानी, अवधी मा संस्कार, सबकुछ बिगरिगवा, प्यारा देशु, अवधी कजरी गीत, कोरोना गीत, करोना काल मा कवियन श्रोतन कै पीर, अब गांव मइहां गांव ढूंढित है, धोखेबाज, अवधी गजल, लरिकन बरे लंगोटी, कोरोना चालीसा, हमरे गांव केरि मटिया, लागा लाकडाउन, न्योता, बच्चा तुमहौ कबौ बुढ़इयो, खण्ड खण्ड होइगवा देश, लड़ब परधानी, कोरोना पय करफू, कोरोना, हाय दादा, कोरोना यमराज दुवारे खड़ा, घर से सूप नदारद बा, करौना माई अब तौ करा प्रस्थान, आवा कोरोनाकाल, साढ़ों का अत्याचार।

5. संस्मरण — 45

करिअमवा — ओम प्रकाश तिवारी

यक टुकड़ा अमावट — प्रशांत द्विवेदी

6. लोककथा — 49

यक जनी रहीं जीरा — प्रस्तुति अरूण कुमार तिवारी

7. लेख — 53

अवध के करिंगा — अरूण कुमार तिवारी

ससुरारि मा पियारी — नागेन्द्र बहादुर सिंह चौहान

अवधी निबंध — डॉ0 विनय दास

जन कवि भिखारी ठाकुर — डॉ. अर्चना उपाध्याय

8. व्यंग्य — 68

हुड़क चुल्लू — सर्वेश अस्थाना

फोड़ि डारव इंडिया — पंकज प्रसून

अब का करी — डॉ0 अमिता चौधरी

9. लम्बी कहानी — 73

नादानी — भगवादन दास यादव

10. लघु कथा — 80

पितरन का पानी — चन्द्र प्रकाश पाण्डेय

शिक्षा दान — राहुल देव

अबै घर केत्ती दूर — सूर्य प्रकाश शर्मा 'निशिहर'

जस करै तस पावै — डॉ0 सत्य प्रिय पाण्डेय

11. जान पहिचान : अवधी कृतियों की समीक्षा — 85

12. लखनऊ वि.वि. द्वारा सम्पन्न अवधी शोध डॉ. रामबहादुर — 104

13. अवध भारती प्रकाशन — 109

एक प्रति मूल्य : 50, वार्षिक - 200

आजीवन सदस्यता : 1. **विशेष सम्मानित** : 5000

2. संरक्षक सदस्यता : 11000

रामजोहारि

सम्पादकीय : जो बरा सो बुताना

मनई प्रकृति कै दास होत है। तुलसी बाबा कुछ यही भाव मा लिखत हैं - जाके बल विरंचि हरि ईसा, पालत, सृजत, हरत दससीसा। ब्रह्मा सृष्टि का सिरजत हैं, भगवान बिसनू पालन पोषण करत हैं औ संकर जी संहार करत हैं। भारतीय दरसन कै ई मिथक प्रकृति औ सृष्टि बरे बिल्कुल सटीक है। जब-जब संतुलन बिगड़त है, प्रकृति वहिका सुधारत है। ई बात जग जाहिर है, मुला मनई अपने अहंकार मा परम सत्ता की ताकत का भूलि जात है। जब पानी खोपड़ी के उप्पर से बहै लागत है तब वहिकै उपचार जरूरी होइ जात है। कोरौना के बहाने प्रकृति यहै उपचार किहिस है। पूरी दुनिया मा ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, सह-अस्तित्व, जल, हवा, जंगल और न जाने कतने अभियान चलाये गये। देस-दुनिया मा छोट बड़ी पंचाइत बलाई गै अउ दुनिया के आगम बरे चेतावा गवा मुला दुनिया तौ अपने स्वारथ अउ अहंकार मा अंधराय गै। बड़कए मूठी भर देस छोटकए देसन का मूरी गाजर समझै लाग। आतंकवाद मा पूरी दुनिया झरसै लाग, गरीब-अमीर के बीच कै खाईं बाढ़त गै। धरती पर अनाचार, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार कै बाढ़ आइ गै। चीन जइसन कम्युनिस्ट देस जे न धरम का मानै न इंसानियत का, आपन धौंस औ हेकड़ी जमावै खातिर गुंडई पर उतारू होइगा। कहा तौ यहौ जात है कि कोरौना वाइरस का वहै पैदा किहिस। ई बात पर अबै परदा परा है। मुला यक बात तौ जरूर भै कि अमरीका औ योरोपीय देस जउन अपने गुमान मा फूले नाही समात रहैं उन सबकै सेखी झारि दिहिस कोरौना।

कोरौना से नफा कम नुकसान जादा भवा। जब हम सब 'आपदा मा अवसर' मुहावरा पर विचार करी तब जउन सबसे बड़ा अवसर मिला है ऊ है पर्यावरण दूषण कम भवा। हवा-पानी दुइनौ निर्मल होइ गये। भोगवाद, बाजारवाद औ उपभोक्तावाद पर लगाम लाग। चौबीस घंटा कोल्हू के बैल बने आदमी का घर-परिवार औ समाज से जुड़ाव भवा। साफ-सफाई पर सबसे ज्यादा ध्यान गवा। खान-पान मा सुधार भवा। भीड़-भाड़ पर रोक लाग, आयुर्वेद पर पूरी दुनिया कै विशुवास बाढ़ा, शाकाहार की ओरिया ध्यान गवा, फास्ट फूड संस्कृति से मोह भंग भवा। कोल्डड्रिंक, आइसक्रीम के छलावा से मुक्ती मिली। इह सबसे ऊपर धरम-करम पर मनई कै आस्था बलवती भै। प्रकृति पूजा कै भाव मन मा जागा। कहै कै मतलब कि दिन-दिन मूल्यविहीन होत जात रही दुनिया मानव मूल्य, जीवन मूल्य और सनातन मूल्य की ओरिया मुखातिब भै। ई तौ कोरौना कै सुकुल (उजेर)

पाख आय।

जब कोरोना के कृष्ण (अंधेर) पाख कै बात आवत है तौ बड़ी खामी देखै का मिलत है इनकै आदमी से सीधा साबका परत है बेरोजगारी, शोषणा, तहस-नहस आर्थिक व्यवस्था, रोजी-रोजगार बंटाधार, अराजकता, भ्रष्टाचार, शहर से गांव कै पलायन - निरंकुश पुलिस तंत्र, अस्पताल और चिकित्सा जगत कै लूटमार, छोट-मोट नौकरिहन के रोजी रोटी पर संकट, ठेलिया, खोमचा औ फुटपाथ कै तबाही, सरकारी राजस्व मा भारी गिरावट ई कुछ बानगी आयं जउन हमरे सामाजिक जीवन का तहस-नहस करि डारिन। सबसे बड़ी आफत तौ पढ़ाई-लिखाई, स्कूल-कालेज, शिक्षक-विद्यार्थी पर आई। पूरा साल कै साल बरबाद होइ गवा। इहकै असर बहुत दूर तक जाये। ई व्यवस्था से जुड़े तमाम शिक्षक औ करमचारी सड़क पर आय गयें। निजी संस्थान तो मेहनताना बदे हाथ खड़ा करि दिहिन। तमाम कारखाना बदं होइ गए, कामगारन के हाथे से काम चला गवा। चमकदार दुनिया कै रंगत फीक होइगै। मनई अपने आगम के बरे घोर चिंता मा परि गवा।

ई छः महीना के कोरोना काल मा नई नई बातैं, नये-नये नियम, नई-नई चीजैं सामने आई। क्वारंटीन, सेनेटाइजर, आइसोलेट, इम्युनिटी पावर, कैन्टिमेंट एरिया, वाइरस, कोरोना वारिअर, पाजिटिव, निगेटिव, प्लाज्मा, लाकडाउन, अनलाक डाउन, हैंडवाश जइसन तमाम भाषाई संस्कार ईजाद भयें। उत्सवधर्मी आयोजन पर लगाम कसी गै कवि सम्मेलन, संत सम्मेलन, विचार गोष्ठी, सेमिनार, साहित्यिक समारोह सब बंद। कोरोना नवा तंत्र विकसित किहिस बेबिनार औ आनलाइन कै धूम मचि गै। हर्रा लगै न फिटकिरी रंग बना रहै चोखा। डिस्को, बैंड बाजा, लाइट टेंट, म्युजिकल पार्टी, देवी जागरण, भागवत कथा, संत सम्मेलन, प्रवचन सहित तमाम धार्मिक आयोजन ठप्प। लोक गायक, लोक कलाकार अपने-अपने घर मा कैद। रेलगाड़ी, हवाई जहाज कै आवाजाही थमि गै। दुनिया मेरी मुट्ठी में वाली कहकुति अपनी औकात मा आय गै-

है धरा को प्रमान यही तुलसी
जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।

सब पंचन का रामजोहारि

राम बहादुर मिसिर

कोरोना काल मा अवधी

प्रदीप तिवारी 'धवल'
अतिथि संपादक,

जिनगी बड़ी जीवट वाली होत है, कब रुकत है, हमेसा चलत रहत है। यकदम सदानीरा सरिता की नाई, बहा करत है। चहे जेतनी महापरलय होय, महामारी होय, प्राकृतिक आपदा–विपदा परै जिनगी कहाँ रुकय वाली अहै। जइसनै सुरुज से घाम औ चनरमा से छाँहीं कब्बौ नाहीं रुकत, चहे धरती पय जेतनी चिल्ल पों मची होय वइसनै जिनगी आपन कोंपल नाहीं रोकत ऊ फूटा करत है, नई आस औ विसवास के साथ। जब से धरती पय साँस धड़कब सुरु भय है आज तक मानवता यक से यक परलय, बाढ़, सूखा, महामारी, बवंडर, समुद्री तूफान, भुंइडोल सहत चला आवत है। मुला जिनगी आगे पीछे थक हार के कउनी न कौनी जतन उबरत रही है। औ पूरा बिसवास है कि फिर से उबर के देखाए। मजे की बात कि बरसीम की नाईं जिनगिउ कटे पय अउर हर्रात है।

सन 2019 के दिसंबर माह मा चीन देस के सहर बुहान के चमगादुर बजार से निकरी ई कोरोना बेमारी यतनी बड़ी महामारी बन जाये ई केहू नाहीं सोचे रहा। अब ई खोज कय विषय है कि चाइना यहिका समूचे संसार से जैविक युद्ध करे खातिर अपने लैब मा तैयार किहिस है कि वाकई ई प्राकृतिक रूप से कच्छ–मच्छ खाय वाले लोगन (चमगुदरी,मेघा, मेचकुर, केकड़ा, मूस, छछूंदर, तुरुकमाटा, गोबरौला, गोजर, लिल्ली घोड़ी, तिलचट्टा, काक्रोच, जोर्रा औ सांप) से फैला है। अब चाहे जइसन होय मुला ई विषाणु देखतय देखत पूरी दुनिया का अपनी कुंडली मा यस कसिस कि बड़ी–बड़ी मोंछ औ भरी पॉकेट वाले देसन कय नस–नस चरमराय गय, औ इक्कीसवीं सदी कय विकसित सभ्यता भरभराय के यक ठौरे पिद्दी भय विषाणु के सामने घुटना टेक दिहिस। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) रोज रोज नवा–नवा सिगूफा छोड़े लाग, यस करो वस करो, ई खाव, ऊ खाव, यहिका न खाव, वहिका न खाव, गरम पियउ, ठंढा न पियउ, न जानी का.. का औ फिर, भारत मा जेतने मुँह वतने हकीम वैद्य मुला जिनगी कय नुक्सान नाहीं रुक पावा। अब तक पूरी दुनिया मा दस लाख से जियादा जिंदगी कोरोना जइसन काल के गाल मा समाय चुकी अहैं, औ विश्व कय साढ़े तीन करोड़ से ज्यादा जनसँख्या यहि विषाणु से धनात्मक होय चुकी अहै। खाली अपने भारत मा एक लाख से उप्पर मनई कय जिउ जाय चुका अहै, औ अब तक भारत मा सत्तर लाख मनई यहिकी चपेट मा आय चुके हैं। सारी पढाई लिखाई, विकास, शोध ा, अनुसन्धान, अविष्कार, विज्ञान पंगु होइगा। अरे वऊ देस पानी माँगत अहें जे–जे मंगल पय जीवन औ चनरमा पय कालोनी बसावे कय सपन बेचत रहें।

चीन से निकरा ई कोरोना कय परेत सगरे यूरोप–अमरीका महादीप का छाप लिहिस। फ्रांस, इटली, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन से चलत चलत अमरीका, ब्राजील,

कनाडा, ईरान दाँवत–दाँवत हिन्दुस्तानौ पहुँच गवा। पूरी दुनिया कय सबसे उत्कृष्ट चिकित्सा व्यवस्था यहिकय उपचार खोजय मा लाचार रही। बड़े–बड़े डागडर यहिके खुदय सिकार होय गए। सुरसा कै अस मुँह लिहे जौ भारत मा पैठा तौ हम सबही खुब थरिया बरतन बजाय के यहिका टिड्डी दल समझ के भगावें कय कोसिस कीन गा मुला वहू जिद्दी विषाणु रहा, धीरे–धीरे आपन रूप देखाउब सुरु किहिस, औ ई नौबत आय गय कि सारा भारत बंद करे का परा। मनई घरे मा पहंद उठा, घरहिन मा होयगय जेल, ई देखउ कोरोना कय खेल। नात–बाँत, रिस्तेदार, हिती–व्यवहारी, इष्ट–मित्र, लरिका, मेहरिया, बाप–पित्ती, भाय–भौजाई, पंडित–नाई, मेहतर–कसाई सब केहू औ सारी नताई यक्कै झटका मा लुंज–पुंज होय गय। जे जहाँ रहा होंही कैद होयगा। यहिमा सबसे जियादा परेशानी उनका भय जे अपने गाँव देस से दूर पेटे कय आगि बुझावे की खातिर देस के तमाम बड़े–बड़े सहरन मा नौकरी औ मजूरी करत रहें। खोमचा वाले, ठेला वाले, चाट–समोसा वाले, रेक्सा वाले, पटरी दुकानदार, मजूर, दिहाड़ी वाले, मिस्त्री, पेंटर, प्लंबर, बढ़ई, लोहार, नाऊ, पंचर वाले, छोट बड़ी कंपनी मा काम करे वाले कुछ दिन तौ जिउ दबाये बचा–खुचा, धरा माल खाइन, मुला धरा धन और धरा अन्न कय दिन चलय, वहू दिन आवा कि सब खतम। औ लॉकडाउन के खतम होय कय उम्मीदे नाहीं। अब ऊ कहकुत है न कि पंछी चहे जेतना उड़े अकास, चारा है धरती के पास। फिर का, संकट मा आपन धरती आपन गाँव याद आवा। जे जहाँ रहा कूच कय दिहिस अपने देस अपने गाँव की ताईं द्य रेल, बस सगरी सवारी बंदय रही। जे जयसन पाइस वइसने अपनी–अपनी माटी की ओर चलि पड़ा। पैदर चलत चलत नान्ह–नान्ह गेदहरन के गोडे मा छाला पड़गा। केतने मनई सड़क हादसा मा मरिगे काहे से कि जरूरी सामानन की आपूर्ति वाले वाहन बेधड़क दौड़त रहे। सैकडन–हजारन किलोमीटर कय सफर साईकिल, मोटर साईकिल, पैदर चलिके लोग पहुंचे। केतने मनई राहिन मा निपट गए, घरे खाली खबर पहुंची। देस मा बड़ी अव्यवस्था होय गय। गरीब मजूर बेसहारा सड़क–सड़क भटकत रहा, केहू सुध कय लेवइया न रहा। जब बड़ी बदनामी होय लाग तौ सरकार कय आँख खुली औ मदद पहुंचब सुरु भय। लेकिन तब तक तौ गंगा जी मा बड़ा पानी बहि चुका रहा। बहुत गरीब गुरबा काल कवलित होय गए। बाद मा लाग कि इनका सबका राजनीतिक लाभ उठावै बरे भ्रमित कीन गवा रहा। आप सब जनतय हौ कि तवा केहू कय गरम भवा होय मुला रोटी कुछय जने सेंकत हैं। ई राजनीती कय चलन आय। राजनीति ऊ पतुरिया आय जे पैसा' लाभ की ताई केहू के लगे सोय सकत है। राजनीति मा शुचिता औ पवित्रता पय वतनय बिसवास करे का चाही जेतना बिलारी का दुदहरी के भित्तर कय चौकीदारी देहे के बाद करिहौ।

अकेलेपन औ एकांतवास मा बड़ा अंतर होत है। अकेलेपन मा मानसिक व्याधि ा बढ़त है और विनास कय बीज यानि ऋणात्मकता पैदा होत है। जबकि एकांतवास